



THE
MENTORING
PROJECT

सफलता का प्रबन्धः विजयी होने पर भी नम्र बने रहना



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

सफलता का प्रबन्ध: विजयी होने पर भी नम्र बने रहना



लेखक: DR. RICHARD PERHAI

(डॉ. रिचर्ड परहाई)

सम्पादक: DR. LARRY OATS

(डॉ. लैरी ओट्स)

विषय सूची

परिचय	4
स्वयं निर्मित होने का भ्रम	6
घमण्ड की खाई	9
सफलता का प्रबन्ध	12
जब संसार तालियाँ बजाता है	16
अविनाशी मुकुट	21
निष्कर्ष	25



परिचय

जीत का अनुभव अत्यन्त प्रबल होता है। लोग आपका नाम लेते हैं और जब आप बोलते हैं, तब आपकी बात ध्यान से सुनते हैं। सम्भव है कि आपको पदोन्नति मिली हो, अतिरिक्त धनराशि (बोनस) मिली हो, या पहाड़ी पर बना हुआ घर मिला हो। ऐसे समय में यह मान लेना बहुत सरल होता है कि यह सब कुछ आपने अपनी ही सामर्थ्य से बनाया है। तब मनुष्य अपने आप को अजेय समझने लगता है।

यही वह अन्तर है। यह तब दिखाई देता है जब आप शिखर पर पहुँच जाते हैं। यह आपको उस सत्य को देखने से रोकता है कि आप अभी भी केवल मनुष्य ही हैं। बाइबल की शिक्षाएँ हमारे घमण्ड को चुनौती देती हैं। हम पूर्ण पतन के सिद्धान्त पर विश्वास करते हैं, जिसका अर्थ है कि हमारे हृदय निरन्तर मूर्तियाँ बनाते रहते हैं। सफलता जैसी अच्छी बातें भी स्वयं का आदर करने की साधन बन सकती हैं। सम्भव है कि आप यह सोचने लगे कि आपकी जीत आपको उस व्यक्ति से श्रेष्ठ बनाती है जो असफल हुआ है। परन्तु ऐसा नहीं है।

आपके पास ऐसा क्या है जो आपने नहीं पाया?

आपके पास जो कुछ भी है, वह एक वरदान है—वह बुद्धि जो समस्याओं का समाधान करती है, आपके फेफड़ों में आने-जाने वाली साँस, और वह परिवार जो आपका साथ देता है। यदि आप इन सब का श्रेय स्वयं ही ले लेते हैं, तो आप उस महिमा को अपने लिए ले रहे हैं जो परमेश्वर की है।

मेरी सेवकाई के आरम्भिक वर्षों में, मैंने एक संदेश दिया जिसे सभी लोगों ने बहुत पसन्द किया। मैं वहाँ से गर्व की भावना के साथ लौटा और मिली हुई प्रशंसा को मन में बसाए हुए था। परन्तु जब मैं घर पहुँचा, तो मेरा बच्चा संक्रमण से पीड़ित था, और कुछ ही मिनटों में मैं स्नानघर के फर्श पर उल्टी साफ कर रहा

था। परमेश्वर के पास हमें स्मरण कराने का यह एक तरीका है कि हम में कौन हैं। जीवन कठिन है, और इसे आपकी पदवी की कोई चिन्ता नहीं है।

सफलता एक उत्तरदायित्व है। यदि आपका प्रभाव अधिक है, तो सेवा करने का आपका दायित्व भी अधिक होता है। आप अपने जीवन के स्वामी नहीं हैं; आप उसके प्रबंधक हैं। और सच्चा स्वामी आपसे यह उम्मीद करता है कि आप उसका भली-भाँति उपयोग करें।

प्रशंसा को अपने सिर पर न चढ़ने दें। यह विषय के समान है। यह आपको उस परिश्रम को भूलने पर विवश कर देती है, जो वहाँ तक पहुँचने में लगा था। यह आपको उन लोगों को भूलने पर विवश कर देती है जिन्होंने आपकी सहायता की है। सबसे बढ़कर, यह आपको यह भी भूलने पर विवश कर देती है कि आप अनुग्रह के द्वारा बचाए गए पापी हैं।

इतिहास ऐसे लोगों से भरा पड़ा हुआ है जिन्होंने बहुत बड़े-बड़े कार्य किए, परन्तु वे यह भूल गए कि उन्हें साधन किसने दिए थे। वे प्रायः अकेले और कठोर हृदय वाले बन गए। यदि आप यह सोचते हैं कि आपने सब कुछ स्वयं ही किया है, तो सफलता आपको अकेला छोड़ सकती है। आप दूसरों को पड़ोसी के रूप में नहीं, वरन् ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियों के समान देखने लगते हैं।

यह आसान मार्ग के विषय में नहीं है। यह उस संघर्ष के विषय में है जिसमें हम तब भी नम्र बने रहते हैं जब दूसरे लोग हमारी प्रशंसा करना चाहते हैं। हमें अपने हृदय में छिपे हुए घमण्ड और इस खतरे के विषय में बात करनी चाहिए कि हम यह विश्वास करने लगते हैं कि हम स्वयं निर्मित हैं। यदि आपने अभी कोई बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है, तो सावधान रहिए। शिखर से दिखाई देने वाला दृश्य सुन्दर तो होता है, परन्तु वहाँ से गिरना कठिन हो सकता है। आपके हाथ भरे हुए हैं—उन्हें मुट्ठी मत बनने दीजिए। अपने हाथ खुले रखिए। आपके पास जो कुछ भी है, वह सब उधार दिया गया है।

आइए, उस भ्रम पर विचार करें कि मनुष्य स्वयं निर्मित है।

1

स्वयं निर्मित होने का भ्रम

“स्वयं निर्मित होने” का विचार अब तक सुनाई गई सबसे प्रभावशाली कहानियों में से एक है। यह कहता है कि पर्याप्त इच्छाशक्ति, सुबह जल्दी उठने की आदत और दृढ़ निश्चय के द्वारा आप कुछ नहीं में से भी अपना राज्य खड़ा कर सकते हैं। इस कहानी को सुनाना अच्छा लगता है। यह आपको ऐसा अनुभव कराती है कि आप अपने जीवन पर नियंत्रण रखते हैं। परन्तु मसीही दृष्टिकोण से यह घमण्ड से भरी हुई एक काल्पनिक कहानी है। यह ऐसा है जैसे किसी घर को देखकर यह भूल जाना कि लकड़ी, भूमि और यहाँ तक कि काम करते समय आपके फेफड़ों में चलने वाली साँस किसने दी है। यदि हम अगुवाई और दीनता के विषय में बात करना चाहते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमने उस घर को नहीं बनाया—हमने तो केवल उस वास्तविक स्वामी के लिए उस कार्य की देखरेख की है।

देने वाला और वरदान

यदि आप अपने अहंकार को तोड़ना चाहते हैं, तो आपको उसे 1 कुरिन्थियों 4:7 की कसौटी पर परखना चाहिए। प्रेरित पौलुस एक ऐसा प्रश्न पूछता है जो प्रत्येक “विजेता” को वहीं पर रुककर सोचने पर विवश कर देता है: “आपके पास ऐसा क्या है जो आपको प्राप्त नहीं हुआ है?” यह केवल एक सुझाव नहीं है; यह एक कठोर जाँच है। यह उस व्यावसायिक योग्यता-आधारित श्रेष्ठता की धारणा पर सीधा प्रहार है, जिसे हम बहुत दृढ़ता से पकड़े रहते हैं। जब आप अपनी “जीत” को देखते हैं, तो आपको वे घंटे दिखाई देते हैं जो आपने उसमें लगाए हैं। परन्तु बाइबल आधारित दृष्टिकोण इससे भी पीछे देखता है। आपने अपनी बुद्धि-क्षमता को नहीं चुना। आपने संख्याओं, तर्क या अगुवाई के लिए अपनी स्वाभाविक योग्यता को नहीं चुना। ये सब बातें आपकी पहली साँस लेने से भी पहले आपके डी. एन. ए. में निहित कर दी गई थीं।

इसके अतिरिक्त, आपने अपने जीवन का समय नहीं चुना। आपने यह नहीं चुना कि आपका जन्म इसी शताब्दी में, इसी देश में, या इस विशेष बाजार की पहुँच के साथ हो। यदि आपका जन्म चार सौ वर्ष पहले हुआ होता, तो आपकी व्यापारिक सूझ-बूझ ने सम्भवतः आपको केवल थोड़ा अधिक कुशल किसान ही

बनाया होता। यहाँ तक कि जिसे हम "भाग्य" कहते हैं, वह वास्तव में परमेश्वर की प्रभुता है। यह भी आपके नियन्त्रण में नहीं था कि ठीक उसी दिन उचित व्यक्ति ने आपका ईमेल पढ़ लिया, या बाज़ार में ऐसा परिवर्तन आ गया जिससे आपका उत्पाद लोगों की आवश्यकता के अनुसार हो गया। जब आप उन सब बातों को अलग कर देते हैं जो आपको प्रदान की गई थीं, तब जो शेष रह जाता है, वह केवल एक ऐसा प्राणी होता है जो अनुग्रह के द्वारा स्थिर किया जाता है। जब आप यह महसूस करते हैं कि आपका "कठिन परिश्रम" भी उस स्वास्थ्य और सामर्थ्य का परिणाम है, जिसे परमेश्वर आपके भीतर बनाए रखता है, तब घमण्ड करना ईश्वर विज्ञान की दृष्टि से असम्भव हो जाता है। आप स्वयं निर्मित नहीं हैं; आप परमेश्वर के द्वारा स्थिर किए गए हैं।

कठिन परिश्रम की दृढ़ता

यह बात स्पष्ट होनी चाहिए: यह आलसी होने का कोई कारण नहीं है। "जीवन के मार्ग का ईश्वर विज्ञान" का अर्थ यह नहीं है कि आप पीछे बैठ जाएँ और सफलता की प्रतीक्षा करें। हमें कठिन परिश्रम करने और तब तक आगे बढ़ते रहने के लिए बुलाया गया है, जब तक हम परिणाम न देख लें। आपने प्रयास किया, बलिदान दिए, और तब भी आगे बढ़ते रहे जब दूसरों ने हार मान ली। समस्या कठिन परिश्रम नहीं है—समस्या तब आती है जब आप यह सोचने लगते हैं कि आपका प्रयास ही आपकी सफलता का मुख्य कारण है, बजाय इसके कि आप उसे उस साधन के रूप में देखें जिसका उपयोग परमेश्वर ने किया है। आप उस सामर्थ्य का प्रबंध कर रहे हैं जो परमेश्वर ने आपको दी है।

इसे एक किसान के समान सोचिए। उसे खेत जोतना है, बीज बोना है और खरपतवार निकालना है। यह वास्तविक काम है। यही दृढ़ परिश्रम है। परन्तु वह बीज में जीवन उत्पन्न करने की आज्ञा नहीं दे सकता। वह मिट्टी को जाग उठने का आदेश नहीं दे सकता। वह केवल प्रक्रिया का प्रबंध करता है, और वृद्धि परमेश्वर देता है। इसलिए जब आप अपने काम में सफलता प्राप्त करते हैं, तो हँसिए—आपने जितने घंटे लगाए और जो त्याग किए हैं, उनके लिए कृतज्ञ रहें। परन्तु स्वयं उस काम की आराधना न करें। कठिन परिश्रम करना अच्छा है, परन्तु उसे अपना परमेश्वर बना लेना स्वच्छ वस्त्र पहने हुए घमण्ड के समान है। यह ऐसा मानने के समान है कि आपके हाथ में फावड़ा होने के कारण ही सूर्य उदय हुआ और वर्षा हुई।

दानियेल चार कठोर उदाहरण प्रस्तुत करता है। नबूकदनेस्सर परम "विजेता" था। उसने एक साम्राज्य खड़ा किया, वह अपने महल की छत पर खड़ा हुआ और उसने अपनी महिमा के वैभव का श्रेय अपनी ही सामर्थ्य को दिया। उसके शब्दों पर ध्यान दें—वे सब "मैं" और "मेरा" से भरे हुए हैं। देने वाले के लिए कोई स्थान नहीं था। वह भूल गया कि वह एक ऐसा मनुष्य है जिसे कुछ समय के लिए अधिकार सौंपा गया

है। और जब तक उसके शब्द उसके मुँह में ही थे, तब तक निर्णय सुनाया जा चुका था। उसने अपना विवेक खो दिया, जब तक कि अन्ततः उसने यह स्वीकार नहीं किया कि परमप्रधान मनुष्यों के राज्य पर शासन करता है।

यही नबूकदनेस्सर का जाल है। जब आप "स्वयं निर्मित" होने के झूठ पर विश्वास करने लगते हैं, तो आप नाजुक हो जाते हैं। आप अपनी ही महिमा के मोह में पड़ जाते हैं और दूसरे लोग चुपचाप सीढ़ी के पायदान बन जाते हैं। यह अलगाव को जन्म देता है, क्योंकि स्वयं को बनाया हुआ मानने वाला मनुष्य वास्तव में उन लोगों पर भरोसा नहीं कर पाता जिन्होंने उसी प्रकार नहीं "कमाया" है, जैसे उसने कमाया है। यह चिन्ता को जन्म देता है, क्योंकि यदि आपने सब कुछ स्वयं बनाया है, तो आपको सब कुछ स्वयं ही सम्भाल कर रखना होगा। और यह पतन को जन्म देता है, क्योंकि देर-सबेर बाजार बदलता है, शरीर दुर्बल होता है, प्रशंसा समाप्त हो जाती है, और वह पहचान भी समाप्त हो जाती है जो केवल उपलब्धियों पर आधारित होती है। सफलता में स्थिर बने रहने का एकमात्र मार्ग यह है कि आप खुले हाथों के साथ जीवन जिँएँ, यह स्मरण रखते हुए कि आप एक प्रबंधक हैं—कुछ समय के लिए आपको साधन दिए गए हैं—और आप सच्चे स्वामी के प्रति उत्तरदायी हैं।

2

घमण्ड की खाई

पहाड़ की चोटी पर एक विशेष प्रकार का मौन आपकी प्रतीक्षा करता है, और वह शान्ति वाला मौन नहीं होता। वह किले का मौन होता है। जब आप अन्ततः उस गन्तव्य तक पहुँच जाते हैं जिसके पीछे आप इतने समय से लगे हुए थे—चाहे वह उच्च-स्तरीय अगुवाई करने का पद हो या अपने कार्य-जीवन का शिखर—तो प्रायः आपको यह अनुभव होता है कि जिस दृढ़ता और अथक परिश्रम ने आपको वहाँ तक पहुँचाया है, उसी ने आपके आसपास के लोगों को आपसे दूर भी कर दिया है। सफलता केवल एक राज्य का निर्माण नहीं करती; वह एक दीवार भी खड़ी करती है। आप अपने जीवन को “महत्वपूर्ण” बनाने का प्रयास करते हुए बिताते हैं, परन्तु अन्ततः यह महसूस करते हैं कि महत्व, जब वह अहंकार पर आधारित होता है, तो वह पृथ्वी के सबसे अकेले स्थानों में से एक होता है।

अगुवाई की अकेलेपन की खाई कोई संयोग नहीं है। यह “स्वयं निर्मित” होने के झूठ का सीधा परिणाम है। यदि आप वास्तव में यह मानते हैं कि आपने ही वह मार्ग बनाया है जिस पर आप चल रहे हैं, तो स्वाभाविक रूप से आप उन लोगों को नीचा समझने लगेंगे जिन्होंने ऐसा नहीं किया। आप अपनी सफलता को एक कसौटी के रूप में उपयोग करने लगते हैं, और जो कोई आपके स्तर पर खरा नहीं उतरता, उसे पड़ोसी के समान नहीं, वरन् एक बोझ के रूप में देखने लगते हैं। यही उच्च स्तर पर पहुँचे हुए लोगों का संघर्ष है—वह क्षण जब आपकी उपलब्धि सेवा का साधन होने के स्थान पर दूसरों को अलग करने का हथियार बन जाती है।

तुलना का संघर्ष

सफलता में ऐसा आकर्षण होता है कि वह हमें हमारे मानवीय स्वभाव की मूलभूत वास्तविकताओं को भुला देती है। सभोपदेशक 3:20 हमें स्मरण कराता है कि हम सब एक ही मिट्टी से बने हैं, परन्तु “जीत” आपको यह विश्वास दिलाने लगती है कि आपकी मिट्टी सोने से मढ़ी हुई है। इससे तुलना करने का धीमा विष जन्म लेता है। जब आप जीतते हैं, तो आप केवल उपलब्धि का आनन्द नहीं मनाते हैं; आप अपनी ऊँचाई को इस बात से मापने लगते हैं कि आपके नीचे कितने लोग खड़े हैं। आप अपने आसपास के लोगों

को परमेश्वर का स्वरूप धारण किए हुए लोगों के रूप में देखना बन्द कर देते हैं और उन्हें सीढ़ी के पायदान के रूप में देखने लगते हैं।

वे या तो ऐसे साधन बन जाते हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है, या ऐसी बाधाएँ जिन्हें हटा देना चाहिए। यह परिवर्तन बहुत सूक्ष्म होता है, और प्रायः हृदय के अन्धकारमय कोनों में तब घटित होता है, जब वह आपके ईमेल में दिखाई देने लगते हैं। आप भाई के स्थान पर एक अधिकारी बन जाते हैं। आप एक ऐसे “दूरदर्शी” बन जाते हैं, जो लोगों की उलझी हुई समस्याओं और उनकी वास्तविक आवश्यकताओं के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। यह ईश्वर विज्ञान सम्बन्धी आधार के बिना अगुवाई की लासदी है। आप संसार को प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु दूसरों के साथ वास्तव में जीवन जीने की योग्यता खो देते हैं। आप स्वयं को ऐसे लोगों से घिरा हुआ पाते हैं जो आपके बोलने पर सिर हिलाते हैं और आपकी हँसी-मजाक पर हँसते हैं, परन्तु आप अपने हृदय की गहराई में जानते हैं कि वे आपके लिए सिर नहीं हिला रहे हैं। वे आपके पद और उस अतिरिक्त धनराशि के लिए सिर हिला रहे हैं जो आप उन्हें दे सकते हैं। पूर्ण नियंत्रण पाने की अपनी लालसा में, आपने ऐसा संसार बना लिया है जहाँ कोई भी आपको सत्य बताने का साहस नहीं कर सकता; और जो मनुष्य सत्य सुन नहीं सकता, वह पहले ही पतन की ओर बढ़ रहा होता है।

पहचान का जाल

लगातार मिलने वाली जीत का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि समय के साथ वह आपकी पहचान बन जाती है। जब आपका मूल्य आपकी जीत और हार के लेखे-जोखे से जुड़ जाता है, तब आप एक मनुष्य नहीं रह जाते; आप एक गणना-प्रणाली बन जाते हैं। आप केवल उतने ही अच्छे माने जाते हैं, जितना आपका पिछला तिमाही परिणाम, आपकी पिछली पदोन्नति, या आपका पिछला बड़ा सौदा था। यही पहचान का जाल है। जब आप सफलता के शिखर पर होते हैं, तब यह बहुत उर्जा से भरा हुआ और सामर्थ्य देने वाला लगता है, परन्तु जैसे ही आपकी “विजेता” की स्थिति समाप्त होती है, यह आपके भीतर एक ऐसी गहरी खाई उत्पन्न कर देता है, जो सब कुछ बदल देती है।

मैंने ऐसे पुरुषों के साथ समय बिताया है, जो अपने-अपने उद्योगों में दिग्गज थे—ऐसे पुरुष जिन्होंने विशाल साम्राज्य खड़े किए थे—परन्तु जब वे अन्ततः सेवानिवृत्त हुए या बाजार में गिरावट का सामना करना पड़ा, तो वे पूरी रीति से भीतर से खोखले हो गए। वे नहीं जानते थे कि अपने व्यवसायिक परिचय-पत्र पर लिखे पद के बिना वे कौन हैं। यदि आप अपना घर अपनी ही उपलब्धियों की नींव पर बनाते हैं, तो आप उस घर को रेत पर बना रहे हैं। वास्तव में आप उसे रेत पर ही बना रहे होते हैं। और जब पतन के तूफान आते हैं—और वे सदैव आते ही रहते हैं—तो सब कुछ पूरी तरह ढह जाता है। तब आपको

एहसास होता है कि आपने बीस वर्ष अपने ही एक ऐसे रूप का स्मारक बनाने में लगा दिए, जो वास्तव में आपकी आत्मा के भार को संभाल नहीं सकता है। आपकी “विजेता” की स्थिति उधार थी, और स्वामी ने उसे वापस माँग लिया है। क्रूस में अपनी स्थिर पहचान के बिना, सफलता का खोना ऐसा प्रतीत होता है मानो आपने अपना अस्तित्व ही खो दिया है।

सफलता की सम्पूर्ण भ्रष्टता

यह हमें सम्पूर्ण भ्रष्टता की कठिन वास्तविकता तक ले आता है। हम सामान्यतः भ्रष्टता की बात “बुरी” बातों के संदर्भ में करते हैं, परन्तु मनुष्य का हृदय इतना टूट चुका है कि वह परमेश्वर के अच्छे वरदानों का उपयोग भी अपने ही लिए स्मारक खड़े करने में करता है। सफलता एक अच्छा वरदान है। प्रभाव एक अच्छा वरदान है। धन-संपत्ति एक अच्छा वरदान है। परन्तु हमारे हृदय मूर्तियों के कारखाने हैं, इसलिए हम इन वरदानों को लेकर ऐसा धर्म बना लेते हैं जिसमें हम स्वयं ही उसके प्रधान याजक बन जाते हैं। हम अपनी सफलता का उपयोग अपने घमण्ड, दूसरों के प्रति अपनी कठोरता, और परमेश्वर से अपनी स्वतंत्रता को उचित ठहराने के लिए करते हैं।

हम सोचते हैं कि हमने अपने बैंक खातों के द्वारा अपनी आवश्यकताओं को “पूरा कर लिया” है, इसलिए अब हमें प्रतिदिन की रोटी माँगने की आवश्यकता नहीं है। हम भिखारियों के समान प्रार्थना करना छोड़ देते हैं, क्योंकि हमने राजाओं के समान जीवन जीना आरम्भ कर दिया है। यही इस खाई का सबसे घातक भाग है। यह आत्मनिर्भरता का वह शान्त और सम्मानित दिखाई देने वाला पाप है। यह किसी कलंक के रूप में नहीं दिखाई देता है; यह एक अच्छी रीति से व्यवस्थित जीवन के रूप में दिखाई देता है। परन्तु फिर भी यह परमेश्वर की प्रभुता को अस्वीकार करना है। आप ऐसा जीवन जी रहे होते हैं मानो आप स्वयं अपने जीवन का स्रोत हैं, और यही वाटिका में बोला गया पहला झूठ था।

जीत का अनुभव गर्मी के समान होता है, परन्तु यदि उस गर्मी को राजा की महिमा की ओर न मोड़ा जाए, तो अन्ततः वही गर्मी आपके बनाए हुए सब कुछ को जला देगी। घमण्ड की खाई से बचने का एकमात्र मार्ग यह है कि आप इस सत्य से जुड़े रहें कि बाजार चाहे कुछ भी कहे, परन्तु आप अनुग्रह से बचाए गए एक पापी हैं। आपको जानबूझकर पहाड़ से नीचे उतरना होगा और उस संगति के संघर्ष को फिर से स्वीकार करना होगा, जहाँ आपका पद या प्रतिष्ठा आपको विशेष अधिकार नहीं देती है। आपको फिर से एक पड़ोसी बनना होगा। आपको स्मरण रखना होगा कि जिस मार्ग पर आप चल रहे हैं, उसे उसी ने बनाया है जिसके पास उसे आपसे दूर करने की भी सामर्थ्य है। अपने हाथ खुले रखें। शिखर से दिखाई देने वाला दृश्य एक उधार है, विरासत नहीं है।

3

सफलता का प्रबन्ध

एक मूलभूत झूठ है, जिसे सफलता उस क्षण घोषित करती है जब भुगतान प्राप्त हो जाता है या पदोन्नति की घोषणा हो जाती है: “यह आपका प्रतिफल है।” हमें बचपन से ही यह मानने के लिए तैयार किया गया है कि यह संसार लेन-देन के सिद्धान्त पर चलता है, जहाँ यह माना जाता है कि आप जितना परिश्रम करते हैं, उसके बदले में मिलने वाली ‘जीत’ ही वह पुरस्कार है, जिसे आप अपनी उपलब्धियों की अलमारी में रख सकते हैं। परन्तु छुटकारा पाए हुए मन में कोई प्रतिफल नहीं होते। वहाँ केवल साधन होते हैं। जब आपके जीवन में अधिक प्रभाव, अधिक धन-संपत्ति, या अधिक लोगों तक पहुँच बनाने का अवसर आता है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि आपको परमेश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों से सेवानिवृत्त कर दिया गया है। वरन् आपको एक और नया कार्य सौंपा गया है।

स्वामित्व और प्रबन्ध के बीच की खाई ही वह स्थान है, जहाँ अधिकांश “विजेता” अपना मार्ग खो बैठते हैं। स्वामित्व कहता है, कि “मैंने इसे अपने परिश्रम से कमाया है, इसलिए इसका उपयोग अपने अधिक से अधिक सुख के लिए कैसे करना है, यह निर्णय करने का अधिकार मेरा है।” प्रबन्ध कहता है, “स्वामी ने अपना और अधिक धन मुझे सौंपा है, और वह मुझसे इसका पूरा लेखा लेगा कि मैंने उसका प्रबन्ध उसके हितों के लिए किस प्रकार से किया है।” यदि आपके हृदय में यह परिवर्तन नहीं आता, तो आपके जीवन की बढ़ोतरी अन्ततः ऐसे बोझ में बदल जाएगी, जो आपको संभालने के बजाय डुबो देगी, और ऐसा आधार नहीं बन पाएगी जो परमेश्वर के राज्य के कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता कर सके।

प्रभाव की बुलाहट

हमें “बुलाहट” को केवल पासबानों या सुसमाचार प्रचारकों पर लागू होने वाली बात मानना छोड़ देना चाहिए। यदि आप किसी कम्पनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रबन्धक, या उच्च स्तर के खिलाड़ी हैं, तो आपका पद ही आपकी बुलाहट है। यही वह विशेष क्षेत्र है, जहाँ परमेश्वर ने आपको कार्य करने के लिए बुलाया है। परन्तु यहाँ वास्तविक बात यह है: कि आपका पद आपके पिछले कार्य का प्रतिफल नहीं है; वरन् यह स्वामी की ओर से दिया गया एक विशेष कार्य है। परमेश्वर किसी मनुष्य को प्रभाव इसलिए नहीं

देता कि वह अपने आपको महत्वपूर्ण समझे; वरन् इसलिए देता है कि वह निर्बल लोगों की रक्षा करे, सत्य के पक्ष में खड़ा हो, और अव्यवस्था में व्यवस्था बनाए।

जब आप बैठक कक्ष में प्रवेश करते हैं या मंच पर खड़े होते हैं, तब आप वहाँ किसी परदेशी राजा के प्रतिनिधि के रूप में होते हैं। यह आपकी अगुवाई का पूरा स्वरूप बदल देता है। तब आप यह पूछना छोड़ देते हैं, कि “इससे लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे?” परन्तु यह पूछना आरम्भ करते हैं, कि “इससे स्वामी के उद्देश्य कैसे पूरे होंगे?” यदि आप सोचते हैं कि प्रभाव केवल आपके बारे में है, तो वह एक खतरनाक नशा बन जाता है। तब आप कठोर और रक्षात्मक हो जाते हैं, क्योंकि आप हर समय अपनी “प्रतिष्ठा” को बचाने में लगे रहते हैं। परन्तु यदि आपका पद केवल राजा के द्वारा कुछ समय के लिए आपको सौंपा गया एक उत्तरदायित्व है, तो आप साहस के साथ खड़े हो सकते हैं। तब आप अप्रिय होने पर भी सत्य बोल सकते हैं। आप गलत होने की सम्भावना को भी स्वीकार कर सकते हैं। आपका पद आपकी नहीं, वरन् राजा की प्रतिष्ठा के प्रबन्ध का दायित्व है।

बढ़ोतरी का प्रबन्ध

जब बैंक खाते में धन बढ़ता है या मंच पर आपका प्रभाव बढ़ता है, तब आप वास्तव में क्या करते हैं? अधिकांश लोगों की पहली प्रवृत्ति होती है कि “जीवन-शैली में धीरे-धीरे बढ़ोतरी” — अर्थात् अपने जीवन के हर हिस्से को धीरे-धीरे और चुपचाप इस प्रकार बढ़ाते जाना कि आपके खर्च आपकी नई आय के बराबर हो जाएँ। परन्तु एक प्रबन्धक के लिए बढ़ोतरी का परिणाम “सेवा में बढ़ोतरी” होना चाहिए। आपके पास जितना अधिक होगा, उतना ही अधिक आपके पास बाँटने का दायित्व होगा। इसके लिए ऐसी व्यावहारिक बुद्धि की आवश्यकता होती है जो दृढ़ हो और हमारी उपभोक्तावादी संस्कृति के खिचाव का विरोध कर सके।

बढ़ोतरी का प्रबन्ध करने का अर्थ है कि अपनी आवश्यकताओं के लिए एक “सीमा” पहले से निर्धारित करना। यदि आप पहले से यह निर्णय नहीं लेते कि “पर्याप्त” क्या है, तो आप अपना पूरा जीवन ऐसे लक्ष्य के पीछे भागते हुए बिता देंगे, जो हमेशा आपकी पहुँच से बाहर रहेगा। आपको यह महसूस करना होगा कि आपके हाथों में दिया गया अतिरिक्त धन किसी बड़े घर के लिए नहीं है; वरन् इसलिए है कि परमेश्वर आपके द्वारा किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए उसे उपलब्ध कराना चाहता है। हो सकता है कि वह सुसमाचार प्रचार-प्रसार का कार्य हो, कोई स्थानीय सहायता करने का कार्य हो, या फिर आपके समुदाय के लोगों को स्थिर और सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराना हो। जो भी हो, परन्तु बढ़ोतरी कोई ऐसा अतिरिक्त भाग नहीं है जिसे केवल अपने उपयोग में लाया जाए, वरन् यह एक दायित्व है जिसका

प्रबन्ध किया जाना चाहिए। आप जल के भण्डार नहीं, वरन् उसके बहने का माध्यम हैं। यदि जल आपके द्वारा बहना बन्द कर दे और एक ही स्थान पर इकट्ठा होने लगे, तो अन्ततः वह सड़ने लगता है।

गुप्त हाथ

सफलता जिस “मुझे देखो” वाली आत्मा को बढ़ावा देती है, अर्थात् वह व्यर्थ की प्रशंसा पाने की लालसा, उसे समाप्त करने का सबसे प्रभावी उपाय—गुप्त हाथों का अभ्यास करना है। सफलता आपको दिखाई देने की इच्छा उत्पन्न करती है। वह आपको ऐसा “दानदाता” बनाने के लिए प्रेरित करती है, जिसका नाम अस्पताल के किसी भाग पर या कलीसिया की दानदाताओं की पट्टिका पर लिखा हो। हमें यह भावना अच्छी लगती है कि हम ही वे लोग हैं जिनके पास उत्तर और संसाधन दोनों हैं। परन्तु यीशु ने सार्वजनिक धार्मिकता के खतरे के विषय में बहुत स्पष्ट रूप से बताया, उसने कहा कि यदि हम अपने भले काम मनुष्यों को दिखाने के लिए करते हैं, तो हमें अपना पूरा प्रतिफल मिल चुका है। और मैं आपको बताता हूँ, कि मनुष्यों की प्रशंसा, पिता की स्वीकृति की तुलना में बहुत तुच्छ मूल्य रखती है।

गुप्त उदारता अहंकार की औषधि है। यह इस प्रकार देने का अभ्यास है कि यह निश्चित हो जाए कि उसका कोई भी श्रेय आपको न मिले। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि जैसे किसी पड़ोसी का ऋण गुप्त रूप से चुका देना, किसी सेवकाई की सहायता करना, परन्तु सूची में अपना नाम न लिखवाना, या अपनी कलीसिया में ऐसा “छोटा” काम करना जिस पर किसी का ध्यान नहीं जाता है। जब आप गुप्त रूप से सेवा करते हैं, तब आप अपने हृदय को स्मरण दिलाते हैं कि आप कोई प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं, वरन् एक सेवक हैं। इस प्रकार आप उस ऊँचे स्थान को तोड़ रहे होते हैं जिसे संसार आपके लिए बनाने का प्रयास कर रहा है।

“हाशिए पर पड़ा ईश्वर विज्ञान” छिपे हुए जीवन की कठिन सच्चाई से जुड़ा हुआ है। यह इस बात से सम्बन्धित है कि उजियाले में आपकी प्रतिष्ठा की अपेक्षा अन्धकार में आपका चरित्र अधिक महत्वपूर्ण है। यदि आपका विश्वास केवल तब कार्य करता है जब लोग आपको देख रहे होते हैं, तो वह विश्वास नहीं है; परन्तु वह केवल दिखावा करने की एक कला है। परन्तु जब आप गुप्त हाथों का अभ्यास करते हैं, तब आप ऐसी स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं जिसे “अपने बल पर बना हुआ” व्यक्ति कभी नहीं जान सकता है। आपको अपनी छवि बनाए रखने की आवश्यकता नहीं है। आपको यह लेखा-जोखा रखने की भी आवश्यकता नहीं है कि कौन-कौन आपका कोई उपकार चुकाने के लिए बाध्य है। आप ऐसे प्रबन्धक बन सकते हैं जो इस बात से आनन्दित होता है कि स्वामी का कार्य पूरा हो रहा है, चाहे किसी को यह पता न हो कि उसमें आप भी सम्मिलित थे।

दौड़ को पूरा करना

सफलता आपकी अपनी नहीं है कि आप उसे सदा अपने पास रखें। आप अपनी उपाधि, बोनस या अनुयायियों को अपने साथ कब्र में नहीं ले जा सकते हैं। आप अपने साथ केवल अपने प्रबन्ध करने का लेखा लेकर जाते हैं। जब अन्तिम यात्रा का समय आएगा, तब आप चाहेंगे कि आप स्वामी के सामने खाली हाथ खड़े हो सकें—इसलिए नहीं कि आपने सब कुछ खो दिया, वरन् इसलिए कि आपने सब कुछ दे दिया। आपने उस वृद्धि का उचित प्रबन्ध किया है, आपने अपने प्रभाव का उपयोग किया, और आपने गुप्त हाथों से सेवा की, जब तक कि अन्त में राजा की ओर से कहे जाने वाले शब्द कि “बहुत अच्छा किया” के अतिरिक्त कुछ भी शेष न रह जाए।

यह प्रबन्धक की दृढ़ आशा है। हम यहाँ इस संसार में कोई अनन्त राज्य बनाने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, वरन् हम उन ईंटों के साथ विश्वासयोग्य बने रहने का प्रयास कर रहे हैं, जो हमें इस थोड़े समय के लिए दी गई हैं। जीत का अनुभव गर्मी और दबाव जैसा लगता है, परन्तु सेवा का अनुभव शान्ति जैसा होता है। अपने जीवन का स्वामी बनने का प्रयास करना छोड़ दें और उसका प्रबन्ध उस परमेश्वर के लिए करना आरम्भ करें, जिसके पास वास्तव में उसके स्वामित्व का अधिकार है। खाई चौड़ी है, परन्तु अनुग्रह उससे भी अधिक गहरा है। मार्ग पर चलते रहें, कार्य करते रहें और अपने हाथ खुले रखें।

4

जब संसार तालियाँ बजाता है

एक विशेष प्रकार का खतरा तब उत्पन्न होता है जब लोगो का समूह आपकी आलोचना करना छोड़कर आपकी प्रशंसा करने लगता है। संघर्ष के आरम्भिक दिनों में संसार का विरोध और प्रतिरोध आपको वास्तविकता से जोड़े रखता है। आपके आलोचक होते हैं, आपके प्रतिस्पर्धी होते हैं, और आपको स्वयं को सिद्ध करने का निरन्तर दबाव भी बना रहता है। परन्तु जब आप सफल हो जाते हैं—जब आप **प्रभावशाली अगुवाई** के उस स्तर पर पहुँच जाते हैं जहाँ लोग आपका मुँह खुलते ही तालियाँ बजाने लगते हैं—तब आप एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं जो अत्यन्त खतरनाक होता है। वहाँ साँस लेना कठिन हो जाता है। लोग आपको यह बताना बन्द कर देते हैं कि आपके दाँतों में भोजन का कण फँसा हुआ है, और वे तो यह बताना और भी पहले छोड़ देते हैं कि आपके हृदय में घमण्ड ने स्थान ले लिया है।

प्रशंसा को सही रीति से ग्रहण करना, असफलता को सहने की अपेक्षा कहीं अधिक कठिन कौशल है। असफलता पीड़ा तो देती है, परन्तु वह प्रायः आत्मा को सड़ाटी नहीं है। दूसरी ओर, प्रशंसा ऐसे धीमे प्रभाव वाले विष के समान होती है जिसका स्वाद मधु के समान मीठा होता है। यदि आप उसे भीतर भर लेते हैं, तो वह आपकी वास्तविकता को विकृत करना आरम्भ कर देती है। तब आप यह मानने लगते हैं कि संसार आपके जिस “प्रभावशाली” रूप को देखता है, वही आपके व्यक्तित्व का वास्तविक सत्य है। आप यह सोचने लगते हैं कि लोगो की तालियाँ आपके मूल्य का मापदण्ड हैं, जबकि वह तो आपके प्रदर्शन पर लोगो की केवल एक अस्थायी प्रतिक्रिया हैं। यदि आपको संसार की तालियों के बीच स्थिर बने रहना है, तो आपको ऐसी दृढ़, बाइबल आधारित ईश्वर विज्ञान सम्बन्धी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आवश्यकता है जो आपके पाँवों को धरातल पर दृढ़ता से टिकाए रखे।

सारी महिमा केवल परमेश्वर को मिले

हमारे समूहों में हम—*केवल परमेश्वर की महिमा के लिए*—इस वाक्यांश को बहुत पसन्द करते हैं। हम इसे अपने चाय के प्यालो पर भी लिखते हैं और अपने ईमेल के अन्त में भी लिखते हैं। परन्तु सफल पुरुष या स्त्री के लिए यह केवल एक नारा नहीं हो सकता; यह तो जीवित बने रहने का एक साधन होना चाहिए।

आपको महिमा को उसी क्षण परमेश्वर की ओर मोड़ देने की आदत सीखनी होगी, जैसे ही वह आपकी ओर आती है। जब कोई आपकी प्रशंसा करता है, तो मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वह उसे “भीतर खींच ले।” आप उसे अपने भीतर खींच लेते हैं, उसे अपने अहंकार को फैलाने देते हैं और फिर उसे अपने अभिमान में स्थान दे देते हैं। यही से पतन आरम्भ होता है।

प्रशंसा को इस प्रकार ग्रहण करना सीखना चाहिए कि वह आपकी आत्मा को भ्रष्ट न कर दे, इसके लिए उच्च स्तर की आत्मिक सजगता की आवश्यकता होती है। आपको विचित्र या अनादर के साथ व्यवहार करने की आवश्यकता नहीं है। आपको बनावटी विनम्रता के साथ यह कहने की भी आवश्यकता नहीं है, कि “ओह, यह तो कुछ भी नहीं था,” क्योंकि कई बार यह वास्तव में और अधिक प्रशंसा पाने के लिए एक छिपी हुई इच्छा होती है। इसके बजाय, आप उस अच्छे शब्द को “धन्यवाद” कहकर स्वीकार करते हैं, और भीतर ही भीतर तुरन्त उस महिमा का भार उस परमेश्वर को सौंप देते हैं जो वास्तव में उन ईंटों का स्वामी है। आप प्रशंसा को इतने के समान समझते हैं: कुछ क्षण के लिए उसकी सुगन्ध का आनन्द लिया जा सकता है, परन्तु यदि आप उसे निगलने का प्रयास करेंगे, तो वह निश्चय ही घातक सिद्ध होगी।

जिस क्षण आप महिमा को अपने लिए “रखना” आरम्भ करते हैं, उसी क्षण आप राजा की सम्पत्ति के चोर बन जाते हैं। आप उस प्रतिभा का श्रेय अपने नाम कर रहे होते हैं जिसे आपने उत्पन्न नहीं किया, और उस उचित समय का भी जिसका प्रबन्ध आपने नहीं किया, और साथ ही उस अनुग्रह का भी जिसे आपने अर्जित नहीं किया। महिमा को परमेश्वर की ओर मोड़ने का अर्थ यह स्वीकार करना है कि आप एक माध्यम हैं, भण्डार नहीं। सफलता का जल आप में से होकर बहता है ताकि वह दूसरों की सेवा करे और परमेश्वर की महिमा प्रकट करे; उसका उद्देश्य यह नहीं है कि यह जल आपके पैरों के चारों ओर इकट्ठा हो जाए और आप अपनी ही छवि को निहारते रहें। यदि आप प्रशंसा को ऊपर, परमेश्वर की ओर, लौटाना नहीं सीखेंगे, तो अन्ततः आप अपने ही अहंकार में डूब जाएँगे।

नम्रता का मार्ग: छोटे कार्यों की आराधना-विधि

जब संसार आपको ऊँचे स्थान पर बैठा रहा होता है, तब अपने आप को नम्र और वास्तविक बनाए रखने के सबसे व्यावहारिक तरीकों में से एक यह है कि, जानबूझकर “छोटे” कार्यों को करना। सफलता में यह प्रवृत्ति होती है कि वह आपको साधारण कार्यों से छूट दे देती है। आप ऐसी स्थिति तक पहुँच जाते हैं जहाँ किराने का सामान लाने के लिए आपके पास “लोग” होते हैं, छोटे-मोटे कामों को करने के लिए “लोग” होते हैं, और जीवन की उलझी हुई बातों को सँभालने के लिए भी “लोग” होते हैं। आप धीरे-धीरे ऐसे संसार में रहने लगते हैं जहाँ सब कुछ आपकी सुविधा के अनुसार साफ-सुथरा और व्यवस्थित कर दिया

जाता है। यह आत्मिक मृत्यु का एक जाल है, क्योंकि यह उन दैनिक असुविधाओं को दूर कर देता है जो आपके अहंकार को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं।

आपको साधारण कार्यों की आराधना-विधि की आवश्यकता है। यदि आप ऐसे मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं जिसने अभी-अभी करोड़ों रुपये का एक बड़ा काम पूरा किया है, तो आपको घर जाकर कूड़ा स्वयं बाहर फेंकना चाहिए। यदि आप एक ऐसे अगुवे हैं जिसका प्रभाव बहुत बड़े स्तर पर है, तो आपको ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो कलीसिया की संगति के भोजन के बाद देर तक रुककर कुर्सियाँ उठाने या बर्तन धोने में सहायता करे। ये केवल काम नहीं हैं; ये आपके अपने घमण्ड के विरुद्ध किए जाने वाले युद्ध के कार्य हैं। ये ऐसे शारीरिक स्मरण हैं कि आप अब भी केवल मिट्टी से बनाए गए स्त्री एवं पुरुष हैं। नम्रता का मार्ग वास्तविक है—यह उस कार्य को करने का कठोर परिश्रम है जो आपके पद और प्रतिष्ठा के “नीचे” समझा जाता है।

जब आप जानबूझकर जीवन के छोटे और बिना प्रशंसा वाले कार्यों में स्वयं को लगाते हैं, तो आप अपने हृदय को फिर से सही दिशा में स्थापित कर रहे होते हैं। आप स्वयं को स्मरण दिलाते हैं कि आप एक सेवक हैं, कोई प्रसिद्ध व्यक्ति नहीं। जब आप शौचालय साफ कर रहे हों या किसी शिशु का लंगोटा बदल रहे हों, तब “नबूकदनेस्सर” जैसी मनोवृत्ति बनाए रखना बहुत कठिन होता है। नम्रता के ये क्षण परमेश्वर की ओर से अनुग्रह हैं। वे “अपने बल पर सब कुछ प्राप्त करने” के भ्रम को तोड़ देते हैं और आपको मनुष्य होने की मूल वास्तविकता के साथ फिर से जुड़ने के लिए विवश करते हैं। जो अगुवा सेवा करने के लिए स्वयं को बहुत बड़ा समझता है, वह अगुवाई करने के लिए बहुत छोटा होता है।

भीतरी घेरे का खतरा: सत्य बोलने वालों को ढूँढना

शायद सफल व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा खतरा “बड़े लोगों के बीच हाँ में हाँ मिलाने वालों का घेरा” होता है। जैसे-जैसे आप ऊँचे स्थान पर पहुँचते चले जाते हैं, आपका भीतरी घेरा प्रायः छोटा और एक जैसे विचार रखने वाले लोगों तक सीमित होता जाता है। आप अपने चारों ओर ऐसे लोगों को इकट्ठा कर लेते हैं जो आपका दर्शन साझा करते हैं, जो आपकी सफलता में अपना हित देखते हैं, और—सबसे खतरनाक बात—जो आपसे डरते हैं। यदि आपके जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के पास आपके अच्छे पक्ष में बने रहने का कोई कारण है, तो आप बहुत अस्थिर स्थिति में हैं। वास्तव में आप आँखों पर पट्टी बाँधकर यात्रा कर रहे हैं, और आलोचकों का होना उतना हानिकारक नहीं होता है, जितना कि उससे कहीं अधिक खतरनाक यह है कि आपके चारों ओर प्रशंसकों का एक समूह होता है, जो स्वयं को निदेशक मण्डल कहता है।

आपको ऐसे मिलने की अत्यन्त आवश्यकता है जिन्हें आपके पद या प्रतिष्ठा की कोई परवाह न हो। आपके जीवन में ऐसे लोग होने चाहिए जो आपको उस समय से जानते हों जब आप “कोई विशेष व्यक्ति” नहीं थे और जो आपकी जीत-हार के लेखे-जोखे से बिल्कुल भी प्रभावित न हों। यही वे मिल होते हैं जो आपकी आँखों में देखकर आपको बता देंगे कि कब आप मूर्खता कर रहे हैं, कब आप घमण्डी हो रहे हैं, या कब आपने प्रशंसा को अपने भीतर समेटना आरम्भ कर दिया है। इस प्रकार की मिलता दुर्लभ होती है, क्योंकि सफलता लोगों में भय या संकोच उत्पन्न कर देती है। आपको जानबूझकर ऐसे सम्बन्धों के लिए स्थान बनाना होगा जहाँ आपको चुनौती और असुविधा का सामना करना पड़े। आपको लोगों को अपने अहंकार को “घायल करने की अनुमति” देनी होगी।

केवल सिर हिलाने वाला भीतरी घेरा ऐसा घेरा होता है जो आपको एक ऐसा गुम्बद बनाने में सहायता करता है जो अन्ततः गिर जाएगा। “हाशिपू पर पड़ा हुआ ईश्वर विज्ञान” ऐसे भाई-बहनों की उपस्थिति की आवश्यकता बताता है जो उस समय आपको फिर से धूल में ले आएँ जब आप बादलों में उड़ने लगें। यदि आपके जीवन में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो आपको “नहीं” कह सके, तो आपके पास भीतरी घेरा नहीं है; आपके पास तो राजदरबार है। और इतिहास हमें दिखाता है कि राजदरबार उस प्रकार के घमण्ड को जन्म देने का स्थान होते हैं, जो एक भयंकर पतन से पहले आता है। **प्रभाव के सच्चे प्रबन्ध** का अर्थ है कि ऐसे लोगों के प्रति उत्तरदायी होना जो आपकी सफलता से अधिक आपकी आत्मा से प्रेम करते हैं।

सफल प्रबंधक की मनोवृत्ति

अन्त में, प्रशंसा को संभालना निरन्तर कृतज्ञता की मनोवृत्ति बनाए रखने के विषय में है। कृतज्ञता घमण्ड का प्रतिरोधक है, क्योंकि यह उस स्रोत को स्वीकार करती है जहाँ से वरदान मिला है। जब संसार आपकी सराहना करता है, तब आपकी प्रतिक्रिया न तो उस भलाई को ठंडी और कठोर उदासीनता के साथ ठुकराने वाली होनी चाहिए, और न ही महिमा को अपने अहंकार से प्रेरित होकर हृदय से लगा लेने वाली होनी चाहिए। वरन् यह एक शान्त और आनन्दित पहचान होनी चाहिए कि परमेश्वर ने एक तुटिपूर्ण साधन का उपयोग करके एक भला कार्य किया है।

आप अपना सिर ऊँचा और हृदय को नम्र करके इस मार्ग पर चलते हैं। आप “सफलता” को अपना अधिकार नहीं, वरन् एक उत्तरदायित्व मानकर स्वीकार करते हैं। आप प्रशंसा को अपनी महानता की पुष्टि के रूप में नहीं, वरन् स्वामी की अपेक्षाओं के स्मरण के रूप में देखते हैं। मसीही जीवन की वास्तविक दृढ़ता यह है कि एक व्यक्ति सफलता के शिखर पर पहुँचकर भी अपने हृदय को नम्र बनाए रखे। यह सामर्थ्य

की स्थिति में रहते हुए भी सेवक की आत्मा को बनाए रखने की योग्यता है। यही संकरा मार्ग है, और यही वह मार्ग है जो उस “अच्छा किया” तक पहुँचाता है, जिसका वास्तव में महत्व है।

5

अविनाशी मुकुट

दौड़ अन्ततः एक दिन समाप्त हो जाती है। चाहे आपने कितने ही क्षेत्रों में विजय प्राप्त की हो, कितने ही मंच खड़े किए हों, या कितने ही सभागारों में लोग आपके नाम की प्रशंसा के लिए खड़े हुए हों, अन्त में आप एक ऐसी सीमा तक पहुँचेंगे जिसे आपकी पदवी पार नहीं कर सकती है। सांसारिक सफलता एक विचित्र वस्तु है; जब आप उसके बीच में होते हैं, तो वह विरासत के समान प्रतीत होती है, परन्तु अनन्तकाल के उजियाले में वह प्रातःकालीन कोहरे के समान होती है। जब तक परमेश्वर की महिमा का सूर्य वास्तव में उदय होना आरम्भ नहीं होता, तब तक वह दृढ़ और स्थायी दिखाई देती है। परन्तु उस समय “उत्कृष्ट” दिखाई देने वाला कार्य-जीवन और “असीम” दिखाई देने वाली उन्नति वैसी ही दिखाई देने लगती है जैसी वे वास्तव में हैं — अर्थात् एक छोटे से भू-भाग पर मिले हुए अस्थायी उत्तरदायित्व।

अनन्तकाल के उजियाले में जीतना केवल अधिक से अधिक वस्तुएँ इकट्ठी करने के विषय में नहीं है; वरन् यह महसूस करने के विषय में है कि जो कुछ भी आपने इकट्ठा किया है, वह पहले ही मिट्टी में लौटने की ओर बढ़ रहा है। “हाशिए पर पड़ा हुआ ईश्वर विज्ञान” केवल इस विषय में नहीं है कि जब आप सफल हों तब कैसे चलना है; वरन् यह इस विषय में है कि अपनी यात्रा को इस प्रकार कैसे पूरा करना है कि उन बहुत से प्रतिफलों को कसकर पकड़े न रहें जो आरम्भ से ही आपके अपने थे ही नहीं। हम अपने जीवन को एक विरासत बनाने में लगा देते हैं, परन्तु छुटकारा पाया हुआ हृदय जानता है कि जो विरासत आग की परीक्षा में बनी रहेगी, वह वही है जिसे हमने स्वयं नहीं बनाया। यह आपके सफलता के “स्वामी” होने की भावना से हटकर, एक ऐसे सेवक बनने का दृढ़ और बिना भावुकता वाला परिवर्तन है जो लेखा देने के लिए तैयार है।

अनुग्रह का लेखा-जोखा: निकम्मा सेवक

हमें लेखा-जोखा देने का सामना करना होगा। हमारी “स्वयं बनाई” गई संस्कृति में, हम अपने मन में अपने कठोर परिश्रम, अपने त्याग और अपने परिणामों का एक लेखा रखते रहते हैं। हम धीरे-धीरे यह सोचने लगते हैं कि परमेश्वर भाग्यशाली है कि उसने हमें अपने समूह में रखा है। हम यह मानने लगते हैं

कि हमारी सफलता ने कैसे न कैसे सृष्टिकर्ता को हमारा ऋणी बना दिया है—क्योंकि हमने “प्रभावशाली” कार्य किए हैं, इसलिए वह हमारे लिए एक विशेष प्रकार के जीवन या पहचान का ऋणी है। परन्तु सुसमाचार इस प्रकार के घमण्ड का कठोर लेखा-परीक्षक है।

यीशु लूका 17 में एक ऐसी कहानी बताता है जिसे अधिकांश “उच्च प्रदर्शन करने वाले” लोग बिल्कुल भी पसन्द नहीं करते हैं। वह एक ऐसे सेवक का वर्णन करता है जो खेत जोतने या भेड़ों की देखभाल करने के बाद लौटता है, और स्वामी उसे बैठकर उसकी कोई प्रशंसा नहीं करता। वरन् स्वामी उससे कहता है कि वह तैयार होकर भोजन परोसे। यीशु अन्त में कहता है, “इसी प्रकार तुम भी, जब उन सब कामों को कर चुको जिनकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, ‘हम “अयोग्य सेवक” हैं, हमने केवल वही किया है जो हमारा कर्तव्य था।’” वाक्यांश “निकम्मा सेवक” या “अयोग्य सेवक” अहंकार को तोड़ने वाला सबसे प्रभावशाली सत्य है। इसका अर्थ यह है कि चाहे आप एक उत्तम कम्पनी का नेतृत्व करें, या एक विशाल कलीसिया का निर्माण करें, या किसी वैश्विक संकट का समाधान करें, फिर भी आपने परमेश्वर पर कोई उपकार नहीं किया है। आपने केवल वही कर्तव्य पूरा किया है जो उसने आपको अपनी दी हुई सामर्थ्य से और अपने दिए हुए साधनों के द्वारा करने के लिए सौंपा था। अनुग्रह के लेखे में आपके लिए “योग्यता” का कोई स्तम्भ नहीं है जिसे आप भर सकें। परन्तु अपने आपको एक अयोग्य सेवक समझना ही विजय के बीच में सच्ची नम्रता पाने का एकमात्र मार्ग है। यह आपको स्मरण कराता है कि आपकी सफलता की “गरमी” उसकी विधि का वरदान है, न कि आपके प्रदर्शन के बदले मिला हुआ भुगतान है। जब “असाधारण” बनने का दबाव हट जाता है, तब आप अन्ततः केवल विश्वासयोग्य बने रहने के लिए स्वतंत्र हो जाते हैं।

अन्तिम स्वीकृति: वह प्रतिफल जिस पर कभी जंग नहीं लगेगा।

प्रत्येक सांसारिक सम्मान-पदक वर्तमान में नाश होने की अवस्था में है। “वर्ष का उद्यमी” वाली सम्मान-पट्टिका अन्ततः किसी कूड़े के ढेर में पहुँच जाएगी, और भवन पर लिखा हुआ नाम भी एक दिन रेत की धार से मिटा दिया जाएगा, ताकि अगले व्यक्ति के लिए स्थान बनाया जा सके। यदि आप संसार की स्वीकृति के लिए जी रहे हैं, तो आप ऐसी मुद्रा के लिए जी रहे हैं जिसका मूल्य निरन्तर घटता जा रहा है। मनुष्यों की प्रशंसा एक चंचल वस्तु है: वे सोमवार को “होशना” चिल्लाएँगे और शुक्रवार तक “उसे क्रूस पर चढ़ा दो” कहने लगेंगे। यदि आपकी शान्ति भीड़ पर निर्भर है, तो आप अपना जीवन उनकी अपेक्षाओं के दास बनकर बिताएँगे।

एकमात्र ऐसा सम्मान जो कभी नष्ट नहीं होगा—और जो वास्तव में महत्व रखता है—स्वामी की ओर से कहे जाने वाला शब्द ‘अच्छा किया’ है। यही वह अन्तिम स्वीकृति है जो सफल प्रबंधक को परिभाषित करती है। शब्दों पर ध्यान दें: यह “अच्छी तरह जीता हुआ” या “अच्छी तरह अर्जित किया हुआ” नहीं है। परन्तु यह है: “धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तूने अच्छा किया।” राजा जीत के आकार को नहीं देख रहा है; वह प्रबन्ध करने की खराई को देख रहा है। वह यह देख रहा है कि जब संसार बड़ी बातों को देख रहा था, तब आपने “छोटी बातों” के साथ किस प्रकार से व्यवहार किया।

“अच्छा किया” के लिए जीना आज आपके जीवन के मार्ग पर चलने के तरीके को बदल देता है। यह आपको ऐसे निर्णय लेने का साहस देता है जिनके कारण आपको सांसारिक “जीत” की हानि तो उठानी पड़ सकती है, परन्तु साथ ही आप अनन्तकाल के लिए “अच्छा किया” शब्दों को पाएँगे। यह आपको ऐसा अगुवा बनने में योग्य बनाता है जो उस समय भी सत्य बोलता है जब इससे लाभ-हानि प्रभावित होती है, और ऐसा प्रबन्धक बनने में सहायता करता है जो लोगों के साथ पड़ोसियों के समान व्यवहार करता है, तब भी जब संचालक-मण्डल सीढ़ी के पायदानों की माँग कर रहा होता है। जब आप ऐसा महसूस करने लगते हैं कि एकमात्र दर्शक जो वास्तव में महत्व रखता है, वह प्रभुता सम्पन्न न्यायी है, तब संसार की राय की “गरमी” ठण्डी होने लगती है। अब आप सभा-कक्ष के लिए अपनी योग्यता सिद्ध करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं; अब आप सिंहासन के लिए कर रहे हैं।

पूर्ण किए गए कार्य में विश्राम

शायद सफलता का सबसे बड़ा खतरा यह है कि वह आपको यह मानने के लिए प्रेरित करती है कि आप वही हैं जो आप करते हैं। यह सोच आपको निरन्तर “और अधिक” के चक्र में फँसा देती है, क्योंकि आप यह सोचने लगते हैं कि आपकी पहचान ऐसी वस्तु है जिसे आपको हर सुबह स्वयं बनाना पड़ता है। आप सोचते हैं कि यदि आप जीतना बन्द कर देंगे, तो आपका अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। यही “पहचान का जाल” अपने सबसे घातक रूप में होता है। परन्तु सुसमाचार ऐसा विश्राम प्रदान करता है जिसे “स्वयं निर्मित” मनुष्य कभी नहीं समझ सकता है। यह आपको बताता है कि एकमात्र सफलता जो वास्तव में आपको परिभाषित करती है, वह ऐसी सफलता है जिसमें आपका कोई योगदान नहीं था; अर्थात् क्रूस पर मसीह के द्वारा पूरा किया गया कार्य।

आपकी जीत और हार का लेखा एक अस्थायी मापदण्ड है; मृत्यु पर मसीह की विजय एक अनन्त वास्तविकता है।

क्रूस ही अन्तिम विजय है। इतिहास में यह एकमात्र ऐसी “उपलब्धि” है जो वास्तव में मनुष्य की आत्मा का भार सम्भाल सकती है। जब आप मसीह के पूर्ण किए हुए कार्य में विश्राम करते हैं, तब आपका काम आपके अहंकार का मंच नहीं रहता, वरन् आपकी कृतज्ञता को प्रकट करने का माध्यम बन जाता है। आपको “योग्य” होने के लिए जीतने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मसीह आपकी ओर से पहले ही विजय प्राप्त कर चुका है। आपको “महत्वपूर्ण” बनने की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप पहले से ही राजा के पुत्र या पुत्री हैं। सफल हुए बिना घमण्ड से न भरे होने का यही एकमात्र मार्ग है। अर्थात् प्रभाव रखते हुए “परमेश्वर होने के भ्रम” में पड़े बिना जीने का यही एकमात्र मार्ग है।

जब आप यह महसूस करते हैं कि आपकी पहचान मसीह के साथ परमेश्वर में छिपी हुई है, तब आप वास्तव में विश्राम कर सकते हैं। आप कठिन परिश्रम कर सकते हैं, संघर्षों को सह सकते हैं, और मिली हुई बढ़ोतरी का प्रबन्ध कर सकते हैं, बिना ऐसी निराशा के कि ये बातें आपके बारे में कुछ प्रमाणित करें। यदि व्यवसाय असफल हो जाता है, तब भी आप परमेश्वर की सन्तान हैं। यदि पदोन्नति किसी और को मिल जाती है, तब भी स्वर्ग में आपका मुकुट सुरक्षित है। मसीह की विजय में विश्राम करना आपको जीवन के मार्ग पर सबसे दृढ़, धैर्यवान और नम्र कार्यकर्ता बनने योग्य बनाता है, क्योंकि आपको कुछ सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है और देने के लिए सब कुछ है।

दौड़ लम्बी है, और जीवन का मार्ग कठिन है, परन्तु इस मार्ग का अन्त दया से ढका हुआ है। सफलता एक प्रबन्ध है, प्रभाव एक उधार दिया हुआ दायित्व है, और आपका जीवन भाप के समान है। ऐसे राज्य को बनाने में अपना समय व्यर्थ न करें जो दोपहर तक भी स्थिर नहीं रहेगा। इसके बजाय, ऐसे सेवक बनें जो स्वामी के धन का ईमानदारी से प्रबन्ध करता है, ऐसे पड़ोसी बनें जो प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के स्वरूप को धारण किए गए व्यक्ति के रूप में ग्रहण करता है, और अपने आपको ऐसा पापी समझें जो उस अनुग्रह को कभी नहीं भूलता जिसने उसे यहाँ तक पहुँचाया है।

जब संसार आपकी प्रशंसा करे, तब उस आवाज को राजा के आने का स्मरण दिलाने वाला बनने दें। जब बैंक खाते में वृद्धि हो, तो उसे गुप्त रूप से उदारता करने की आपकी क्षमता को बढ़ाने दें। और जब आप अन्ततः उस अन्तिम यात्रा के अन्त तक पहुँच जाएँ, तो यह आशा है कि आप अपने आपको उस एकमात्र न्यायी के सामने खड़ा देखें जो वास्तव में महत्व रखता है, हाथों में जंग लगे हुए कुछ सम्मान-पदकों के साथ नहीं, वरन् उस शान्त और आनन्दमय सन्तोष के साथ कि आपने अपना कर्तव्य भली-भाँति पूरा किया है। जीत की गरमी का अनुभव तो होता है, परन्तु यात्रा का अन्तिम पड़ाव घर जैसा लगता है।



निष्कर्ष

यह एक ऐसी कहानी है जिसके विषय में मैं प्रायः सोचता हूँ, जब पर्वत की चोटी पर पहुँचकर हवा कम होने लगती है और सफलता की “गरमी” आशीष के बजाय बुखार जैसी लगने लगती है। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने पच्चीस वर्ष एक वैश्विक प्रतिष्ठा बनाने में लगा दिए। वह वही व्यक्ति था जिसे हर कोई सभा-कक्ष में अपने साथ चाहता था। वह ऐसा व्यक्ति था जो किसी संकट में प्रवेश करता, अव्यवस्था में व्यवस्था खोज निकालता, और ऐसी “जीत” के साथ बाहर निकलता जो बाजार की दिशा बदल देती थी। वह प्रभाव के सिंहासन पर बैठा था और उसके पास वह “जीवन्त” जीवन था जिसे सभा-कक्ष में उपस्थित हर व्यक्ति बड़ी लालसा से प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था।

फिर, जब वह अपनी सामर्थ्य और प्रतिष्ठा के शिखर पर पहुँचा, तब वह उस जीवन से दूर चला गया। उसने किसी घोटाले या अत्यधिक मानसिक थकावट के कारण ऐसा नहीं किया; वह इसलिए दूर चला गया क्योंकि उसे महसूस हुआ कि उसका सिंहासन ही उसका कारागार बन चुका था। अपने जीवन का अन्तिम दशक उसने एक छोटे, संघर्ष करने वाली कलीसिया की सेवा में बिताया, जो ऐसे नगर में थी जिसे मानो मानचित्रों ने भी भुला दिया था। वह करोड़ों का प्रबन्ध करने से लेकर रविवार की पाठशाला से सम्बंधित पैसे का प्रबन्ध करने लगा और तहखाने में नल-पाइपों की मरम्मत करने तक आ गया। उसके “पुराने जीवन” के लोग उससे मिलने आते और पूछते, “क्या आपको नहीं लगता कि आपने अपनी क्षमता व्यर्थ कर दी?” वे उसके नए जीवन के संघर्ष को देखते और उसे असफलता समझते थे। परन्तु वह ऐसी शान्ति के साथ उनकी ओर देखता, जिसे अपनी ही सामर्थ्य पर भरोसा करने वाला मन कभी समझ नहीं सकता, और कहता है, कि “पच्चीस वर्षों तक मैं ऐसा व्यक्ति था जो अपने राज्य को मुट्ठियाँ भिचकर पकड़े हुए था, परन्तु अब अन्ततः मेरे हाथ खुले हैं।” उसे यह महसूस हो गया था कि सफलता एक अद्भुत साधन है, परन्तु वह एक भयानक घर भी है।

सफलता एक अस्थायी पड़ाव है, आपका स्थायी निवास नहीं है। यदि आप अपनी उपलब्धियों में रहने का प्रयास करेंगे, तो अन्ततः आप कठोर और अकेले हो जाएँगे। आप अपना जीवन ऐसी विरासत की रक्षा करने में बिता देंगे, जो पहले ही नष्ट हो रही है। परन्तु यदि आप अपनी “जीत” को उस फावड़े के रूप में देखें जिसे परमेश्वर ने किसी विशेष दोपहर के कार्य के लिए आपके हाथों में दिया है, तो सब कुछ बदल जाता है। आप उस फावड़े का पूरा उपयोग कर सकते हैं—आप पूरी शक्ति से खोद सकते हैं, भूमि पर काम कर सकते हैं, कुछ सुन्दर बना सकते हैं—परन्तु जब सूर्य अस्त हो जाता है, तब आप उस साधन को एक ओर रख देते हैं, बिना इस भावना के कि आपने अपनी आत्मा खो दी है। “हाशि ए पर पड़ा हुआ ईश्वर विज्ञान” यह दृढ़ता से समझता है कि हम केवल उस मार्ग पर चलने वाले यात्री हैं जिसे हमने नहीं बनाया, उन वरदानों को लेकर जिन्हें हमने अर्जित नहीं किया, उस राज्य की ओर बढ़ते हुए जिसकी रचना हमने नहीं की है।

जीत का यह कठिन समय, अपने पूरे शोर और पूरे दबाव के साथ, वास्तव में परमेश्वर की ओर से दिया गया एक वरदान है, जिसका उद्देश्य आपके हृदय को शुद्ध करना है। वह आपको सफलता दे रहा है ताकि यह देख सके कि आप उसका उपयोग अपने लिए एक स्मारक बनाने में करेंगे या अपने पड़ोसी के लिए एक पुल बनाने में करेंगे। वह आपको प्रभाव दे रहा है ताकि यह देख सके कि आप प्रशंसा को अपने भीतर खींच लेंगे या महिमा को देने वाले के पास लौटा देंगे। अपने हाथों को अपनी पदवी या अपने बैंक खाते के चारों ओर मुट्टियों में न बदलने दें। उन्हें खुला रखें। आपके पास जो कुछ भी है, वह उधार है, और उस प्रकार के प्रबन्धक होने में एक गहरा, दृढ़ आनन्द होता है, जिस पर स्वामी अधिक भरोसा कर सकता है, क्योंकि वह जानता है कि आप उसे चुराने का प्रयास नहीं करेंगे।

शिखर पर खड़े व्यक्ति के लिए प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, अपनी प्रभुता में न्याय करने वाले और हर अच्छे वरदान के देने वाले प्रभु, मैं आज उस पुरुष एवं स्त्री के लिए प्रार्थना करता हूँ जो शिखर पर खड़े हैं। मैं उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ जो संसार की तालियों को सुन सकता है और जो जीत की मदहोश कर देने वाली गर्मी को महसूस करता है। हे प्रभु, वहाँ ऊपर हवा बहुत कम है, और “स्वयं के बनाए हुए” होने के झूठ पर विश्वास करने का प्रलोभन अत्यन्त प्रबल है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें अलौकिक आन्तरिक सामर्थ्य दे—ऐसी सामर्थ्य जो संसार के द्वारा ऊँचे आसन पर बैठाए जाने के समय भी उन्हें नम्र बनाए रखे।

हे प्रभु, उनके हृदय को प्रशंसा के विष से बचाकर रख। जब प्रशंसा आए, तो उन्हें यह सहज प्रवृत्ति दे कि वे महिमा को तेरी ओर ऊपर लौटा दें। जब बही-खाता बढ़े, तो उन्हें यह देखने की बुद्धि दे कि यह उनके

अहंकार के लिए प्रतिफल नहीं, वरन् सेवा करने के लिए फिर से सौंपा गया दायित्व है। उनकी आत्मा में आत्मनिर्भरता की मूर्ति को तोड़ दे। उन्हें रात के शान्त क्षणों में स्मरण करा कि वे अब भी केवल मिट्टी हैं—अर्थात् छुटकारा पाई हुई, प्रेम पाई हुई और सामर्थ्य पाई हुई मिट्टी, फिर भी अन्ततः वे मिट्टी ही हैं। उन्हें ऐसे मित्र दे जो उनकी सफलता से अधिक उनकी आत्मा से प्रेम करें, और जब वे मित्र सत्य बोलें, तब उन्हें सुनने का साहस दे।

वे अपने कार्य-जीवन के मार्ग पर खुले हाथों के साथ चलें। वे सबसे पहले कटोरा और तौलिया उठाने वाले हों, और सम्मान के स्थान को खोजने में सबसे पीछे हों। और जब अन्तिम समय आए और सांसारिक पदक अन्ततः जंग खा जाएँ, तब वे अपना अन्तिम विश्राम उस में न पाएँ जो उन्होंने बनाया है, वरन् मसीह के पूर्ण किए गए कार्य में पाएँ। वे उस एकमात्र स्वामी की “अच्छा किया” वाली बात सुनें जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, और वे महसूस करें कि सबसे बड़ी सफलता कभी शिखर से दिखाई देने वाला दृश्य नहीं था, वरन् वह विश्वासयोग्यता थी जिस का उन्होंने गुप्त हुए स्थानों में अभ्यास किया। उसके नाम में जिसने संसार को बचाने के लिए सिंहासन को छोड़ दिया था। आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्टिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

